

16. 24. 2, 25. 3, 8. P. 1, 2, 13. 35. AK. 3, 4, 12, 50. — 3) = इव wie AK. 3, 4, 12 (38), 11. 3, 5, 9. H. an. MED. HALAJ. SIDDU. K. zu P. 1, 1, 11. पदैषि मनसा हरं दिशो ऽनु पवमानो वा Pār. GRUH. 1, 4. यस्याय कर्म ऋत्यसे मू-
 ळसन्न शतकतोर्वा दैत्यसेनाम् संख्ये MBH. 3, 13710. 4, 1754. 5, 3862. स तु
 दालायमानो वा द्वैधीभावेन पाण्डवः 7, 1211. 13, 4312. R. 1, 10, 37. MRĀKH. 77, 2. MEGH. 81. RAGH. 19, 51. Spr. 2562, v. l. 2723. MĀLAV. 87. Çiç. 3, 63. 4, 35. 7, 64. 18, 25. KIR. 3, 13. मुखेन्द्राश्चन्द्रिका वास्य शिशोर्मुग्धस्मितं
 वनौ Pārçvanāthak. 4, 18 (nach Aufrecht). — 4) = एव H. an. KULL. zu M. 2, 30. KĀTJ. Çr. 1, 1, 4. 8, 18. 10, 2. 2, 6, 20. 29. 36. 3, 1, 7. 4, 15. Spr. 4702. — 5) selbst, sogar: देवासुरगणान्वापि सगन्धर्वोर्गान्भुवि । पैरमि-
 त्रान्प्रसन्नौ वशीकृत्य त्रिपिप्यसि R. 1, 29, 3. नरं वा पुरुषर्षभ । श्रानयस्व
 पशुं शीघ्रम् 61, 8. नास्य वाच्यं भवेत्किंचित् लब्धव्यं वाधिगच्छति MBH. 10, 85. वरमिह वा सुतमरणं न तु मूर्खत्वं कुलप्रसूतस्य Spr. 2742. नयना-
 भ्यां प्रसूतो वा जगार्ति नयचतुषा 4333. आगमनमपि तेषां न संभाव्यते भ-
 विष्यति वा so v. a. gesetzt aber auch, dass PANĀT. 246, 21. — 6) nach
 interrogativen und relativen pronomm. so v. a. wohl, etwa: के वा MEGH. 53. Spr. 737. 3107. किं ते हिडिम्ब एतैर्वा मुखसुतैः प्रबोधितैः MBH. 1, 5984. किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराध्या ÇĀK. 103, 7. कापोन चतुषा किं
 वा Spr. 733. 5233. कथं वा ÇĀK. 25. 56, 3. नैतत्कर्तुं तमा वयम् । यो वा
 शक्तः स कुरुताम् KATHĀS. 18, 142. यत्र वा MBH. 1, 7694. — 7) nach H.
 an. und MED. समुच्चये d. i. = च; nach MED. auch पादपूर्णे. — Vgl. noch
 u. ग्रथ 7) b), 1. क 1) e) und 3) d), 1. घ, 1. य 1) c) ङ), यद् 2) b), यदि 9).

2. वा, वाति Nāigh. 2, 14 (गतिर्कर्मन्). Dhātup. 24, 42 (गतिगन्धनयोः,
 गमनहिंसयोः Vop.). अवान् und अवुस् P. 3, 4, 111, Schol. अवासीत् 7, 2,
 73, Schol. 1) wehen: तमो वातो मयेभु वातु भेषजम् RV. 1, 89, 4. AV. 4,
 13, 8. 16. 7, 69, 1. 12, 3, 12. ÇAT. Br. 2, 2, 3, 8. यदा बलवद्वात्ययुधो वा-
 तोत्पाङ्कः 6, 1, 2, 13. 10, 3, 5, 14. यो दिशं वातो वायात् 11, 3, 3, 11. वाते वा-
 ति 6, 9. TBa. 2, 3, 9, 4. 5. वाति मारुतः R. 1, 14, 17. 68, 13. 2, 41, 15. 3,
 54, 12. Spr. 1769. VARĀH. Bṛh. S. 27, 7. 31, 5. Bhāg. P. 1, 14, 16. 3, 25,
 42. वाग्गन्धवहः BHATT. 2, 10. मारुते वाति वा भृशम् M. 4, 122. 11, 113.
 KĀM. NITIS. 7, 38. Spr. 1914. वायुरवात् R. GORR. 1, 23, 4. BHATT. 8, 61.
 17, 9. 74. ववौ MBH. 1, 5883. 3, 2995. 12041. 5, 7206. R. 2, 91, 24. RAGH.
 3, 14. KATHĀS. 53, 109. BRAHMA-P. in LA. (III) 52, 22. BHATT. 7, 1. अवा-
 सीत् 9, 2. 13, 20. वास्यति MEGH. 43. नाशकन्मारुतो वातुम् HARIV. 90.
 KATHĀS. 23, 42. 44, 136. — 2) anwehen: साधसाधूश्चापि वातीह वायुः Spr.
 3222. — 3) Gerüche aushauchen, ausdünsten, sich verbreiten (von einem
 Geruche): तस्मात्ते शणाः पूतयो वाति ÇAT. Br. 3, 2, 1, 11. वाति गन्धः
 सुमनसो प्रतिवातं कथं च न । धर्मज्ञस्तु मनुष्याणां वाति गन्धः समस्ततः ॥
 Spr. 4982. अदनाद्विरङ्ग वाति Bhāg. P. 5, 2, 13. Diese Bed. ist wohl
 mit गन्धन im Dhātup. gemeint. — Vgl. 3. वा.

— अति darüber hinaus wehen: न भूमिं वातो ऽति वाति AV. 4, 5, 2.

— अनु anblasen, anfachen, weiterwehen: आर्दस्य वातो अनु वाति शो-
 चिरस्तूनं शयीम् RV. 1, 148, 4. 4, 7, 10. 7, 3, 3. 10, 142, 4. वायुरस्य कामा-
 ननुवाति KĀTJ. 12, 13. nachwehen: वातस्य प्रवामुपवामनु वात्पृथिः AV.
 12, 1, 51. TS. 5, 5, 3, 3. 4. अनुवाति शुभो वायुः सेनाम् anwehen R. 5, 73, 52.
 शिवश्चानुववौ वायुः wehen MBH. 3, 2942. Bhāg. P. 10, 33, 21.

— अप ausdünsten: यद्वाच्यमुदरस्यापवाति RV. 1, 162, 10.

— अभि anwehen, herwehen: शं न इषिरो अभि वातु वातः RV. 7, 33, 4.

10, 169, 1. पृतिरेनानभिववौ ÇAT. Br. 4, 1, 2, 6. KĀTJ. 31, 3. सुखो वातो
 ऽभिवति माम् MBH. 4, 2238. पुराभिवति मारुतो यमस्य यः पुरःसरः
 12, 12080.

— अव herabwehen: न्युष्ववातो ऽव वाति RV. 10, 60, 11. तपुर्गन्धो
 वन् आ वातचोदितो यूथे न साह्यं अव वाति वंसगः wird vom Lufthauch
 getragen in 1, 58, 5.

— आ herwehen: द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः । दंतं त
 अन्य आ वातु RV. 10, 137, 2. 3. वात आ वातु भेषजम् 186, 1. आवानावा-
 न्मातरिश्वा KIR. 5, 36. यत्रामोदमुपादाय मार्गं आवाति मारुतः Bhāg. P. 8,
 13, 18. आववुर्वापवो घोराः BHATT. 14, 97. anwehen: वायुर्भूत्वा सर्वा दिशं
 आ वाहि TBa. 3, 10, 2, 2.

— उद् durch Luftzug erlöschen: अग्निर्वा उद्वायुमनुप्रविशति AIT.
 Br. 8, 28 (ÇĀK. zu Bṛh. Ār. Up. 321). KAUC. 72. — Vgl. 3. वा mit उद्.

— अनूद् im Winde (acc.) verwehen: पदा वा अग्निरनुगच्छति वायुं त-
 र्क्षनूद्वाति तस्मादेनमुदवासीदित्याहुर्वायुं ह्यनूद्वाति ÇAT. Br. 10, 3, 3, 8 (ÇĀK.
 zu Bṛh. Ār. Up. S. 321).

— उप anwehen ÇAT. Br. 13, 3, 3, 6. anblasen: पूयं तु मे सच्युपवात 4,
 1, 2, 7. — Vgl. उपवा und 3. वा mit उप.

— परिणि und प्रणि P. 8, 4, 17, Schol.

— निम् 1) wehen: निर्ववुः शतशश्चैव वृष्टिवाताः सविद्युतः R. 4, 29, 11.

— 2) erlöschen: निर्वीर्यतः प्रदीपस्य शिखिर् ÇĀK. Ch. 91, 11. — 3) sich
 abkühlen, gestillt —, erquickt werden: तथा वपुर्लार्द्रापवनैर्निर्ववौ Çiç.
 1, 65. इति सर्वे समुन्नद्धं न निर्वीर्यं कथं च न MBH. 9, 259. तपि दृष्ट एव
 तस्या निर्वीर्यं मनो मनोभवस्वलितम् Spr. 1086. KATHĀS. 104, 57. 117, 51.
 — Vgl. निर्वीर्य. — caus. auslöschen; ablöschen, von der Gluth —, von
 der Hitze befreien, kühlen; stillen, zur Ruhe bringen, erquickern: पं ल-
 म्भे समदहस्तम् निर्वीर्यया पुनः RV. 10, 16, 13. अग्नीनिर्वीर्यया चक्रुः AIT.
 Br. 2, 36. उदकेनास्थीनि ÇĀK. Ch. 4, 13, 13. समिद्धं ज्ञातवेदसम् । वषै-
 र्निर्वीर्यपिप्यमो मेघा भूत्वा सविद्युतः ॥ MBH. 1, 1608. 5857. 11, 241. HA-
 RIV. 6227. KATHĀS. 66, 15. प्रदीपं पटात्तेन MRĀKH. 16, 7. 49, 20. BURNOUR,
 Intr. 589. KATHĀS. 4, 67. अनलप्रवेशेन शोकानलम् PRAB. 90, 20. तारं स-
 र्पिषा सुच. 2, 47, 11. 74, 10. भस्मीभूतांश्चोक्तान् — जलपुक्तेन कर्मणा HA-
 RIV. 11343. अतिप्रबन्धप्रक्षितान् वृष्टिभिस्तमाश्रयं दुष्प्रसक्तस्य तेजसः ।
 शशाक निर्वीर्यपितुं न वासवः स्वतश्च्युतं वक्त्रिभिर्वाद्भिर्बुद्ः ॥ RAGH. 3,
 58. प्रियसंदेशैः सीताम् 12, 63. निर्वीर्यतः कनककुम्भमुल्लोङ्कितेन वंशाभि-
 षेकविधिना शिशिरेण गर्भः 19, 56. दग्धं चिराय मलयानिलचन्द्रपदैर्निर्वी-
 र्यपितं तु परिभ्य वपुर्न नाम MĀLAT. 128, 14. fg. अङ्गानि त्वमनङ्गतापवि-
 धुरापयेत्येहि निर्वीर्य RATNĀV. 65, 9. पितरौ विप्रयोगामितापितौ (acc.)
 निरवापयतां सद्यो दर्शनामृतवर्षिणौ (nomin.) KATHĀS. 25, 265. इति वा-
 क्सुधया तस्याः कृती निर्वीर्यतः 103, 72. निर्वीर्य प्रसवेन लोचनेनामृत-
 श्रुता । दृष्ट्वा मो दुःखदावाग्निदग्धम् 104, 304. Verz. d. Oxf. H. 31, a, 42.
 स (अग्निः) मे निर्वीर्य सक्तु स चतुषी शाम्यते पुनः so v. a. blöndend (= म-
 न्दीकृत्य NILAK.) MBH. 3, 3864. — Vgl. 2. निर्वीर्य fg.

— अनुनिस् erlöschen nach (acc.): निर्वीर्यामनुनिर्वीर्यं तपनं तपनोपलः
 Spr. 1611.

— परिनिस् vollkommen erlöschen, — zur Ruhe gelangen: उत्केव प-
 रिनिर्वीर्यं स्म LALIT. ed. Calc. 20, 9. शाम्यामि परिनिर्वीर्यं MBH. 12, 6635.
 Vgl. परिनिर्वीर्य. — caus. vollkommen zur Ruhe bringen: परिनिर्वीर्य-